मध्यकाल में मुगल अमीर वर्ग के त्यौहार व समारोह

Kritika Pareek

Department of History
Gurugram, Haryana.

Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 11, Issue 5, (September-October 2023)

License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

Abstract

मुस्लिम अमीर वर्ग के जीवन में त्यौहारों का विशेष महत्व था। मुस्लिम अमीर वर्ग जिस शानो शौकत, वैभव तथा हर्षोल्लस के साथ उत्सवों को मनाया करता था, उतने ही शानो-शौकत, वैभव तथा हर्षोल्लास के साथ समारोहों का आयोजन भी करता था। मुस्लिम अमीर वर्ग में बच्चे के जन्म से लेकर शादी होने तक कई तरह की रस्में निभाई जाती थी जिन्हें अमीर वर्ग बड़ी खुशी के साथ पूरी करता था। इन शुभ अवसरों पर वे मित्रों तथा सम्बन्धियों को भी निमन्त्रण पत्र भेजते थे। मुस्लमानों के जन्म एवं उसके बाद के विवाह एवं अन्य अवसरों पर समारोहों का आयोजन किए जाने के उल्लेख मिलते हैं। वे बहुत त्यौहार बड़ी धूम-धाम से मनाते थे जिसका वर्णन इस प्रकार है:

(क) मुर्हरम

यह त्यौहार हिजरी वर्ष के प्रथम मास में मनाया जाता था तथा इस मास के नाम से ही प्रचलित था। यह त्यौहार हसन और हुसैन की शहीदों की यादगार से जुड़ा हुआ है। कुछ रस्में मुर्हरम के दसवे दिन अदा की जाती हैं, जिन्हें अशुरा भी कहा जाता था। इस त्यौहार की रस्मों के अनुसार नहा धोकर, अच्छे वस्त्र पहनना, आंखों में सूरमा लगाना एवं प्रार्थना करना, दोस्तों को घर बुलाकर दावत देना आदि शामिल था।

(ख) शब-ए-बारात

शाबान महीने के पन्द्रहवें दिन की रात्रि को मध्य शाबान की रात्रि कहा जाता था। भारत में इसे 'शब-ए-बारात' के नाम से जाना जाता था। इस त्यौहार का धार्मिक महत्व होने के कारण व्रत की रस्म पैदा हुई। व्रत या उपवास के अतिरिक्त इस दिन आतिशबाजी चलाई जाती थी।

(ग) रमजान

रमजान एक तीक्ष्ण गर्मी का महीना है, इसका रज्म भी तीक्षण गर्मी से सम्बन्धित है। इस महीने में भोजन करने का समय सुबह दो से चार बजे तक होता है। जिस दिन शाम को पहली बार रमजान का चन्द्रमा दिखाई देता है। दिन एवं रात अल्लाह की इबादत में विताए जाते हैं। शाम को सूर्यास्त से पहले छः बजे के लगभग यह व्रत खजूर खाकर अथवा पानी पीकर खोला जाता था। इस दिन बच्चे एक दूसरे से प्रेम से गले मिलते हैं अपना स्नेह प्रकट करते हैं महिलाएं नमाज पर जाने से पूर्व अपने परिवार के पुरूषों के कपड़ों पर सुगन्धित इत्र छिड़कती थी।

(घ) ईद-उल-जुहा

ईद शब्द अरबी भाषा से लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'समय-समय पर आना'। ईद के दो बड़े त्यौहार होते हैं, एक 'ईद-उल-अधा' होता है जो जुलहिजा मास के दसवें दिन मनाया जाता है, तथा दूसरा 'ईद-उल-फितर' जैसे व्रत खोलने से सम्बन्धित त्यौहार भी होते हैं। 'ईद-उल-जुहा' या बलिदान के भोज को ईद-अल-अधा, ईद-उल-नहर कुर्बान ईद, बकरीद भी कहा जाता था। यह त्यौहार हिजनी कलैण्डर के 12 वें महीने 'जुलहिजा' के दसवे दिन आरम्भ होकर अगले तीन दिनों तक मनाया जाता था। इस अवसर पर बादशाह औरंगजेब बेगम के डेरे पर पहुंचा तो बेगम ने दो थाल जवाहर से भरे हुए, चार थाल कपड़े से भरे हुए एवं 4,000 रूप्ए भेंट किए, बेगम ने बादशाह को 2 अंगूठी और पान भी दिया। अनेक अमीर भी जैसे रोशनउद्दौला, कमरूद्दीन खान, मुर्शिद कुली खान, हुसैन अली खां, अब्दुल्ला खान, खान जमन खान आदि अमीर इन त्यौहारों में खुशी के साथ भाग लेते थे। इसके अलावा भी मुस्लिम समाज में कुछ त्यौहार बनाए जाते थे जैसे आशूरा और नौरोज। यह ईरानियों का त्यौहार था यह औरंगजेब के प्रारंभिक वर्षों तक मनाया जाता रहा था। औरंगजेब ने इस समारोह को 'जमने नशात अफरोज' में बदल दिया जो रमजान माह में शुरू होता था।

मुस्लिम समारोह

मुस्लिम अमीर वर्ग जिस शानो शौकत, वैभव तथा हर्षोल्लस के साथ उत्सवों को मनाया करता था, उतने ही शानो-शौकत, वैभव तथा हर्षोल्लास के साथ समारोहों का आयोजन भी करता था। मुस्लिम अमीर वर्ग में बच्चे के जन्म से लेकर शादी होने तक कई तरह की रस्में निभाई जाती थी जिन्हें अमीर वर्ग बड़ी खुशी के साथ पूरी करता था। इन शुभ अवसरों पर वे मित्रों तथा सम्बन्धियों को भी निमन्त्रण पत्र भेजते थे। मुस्लमानों के जन्म एवं उसके बाद के विवाह एवं अन्य अवसरों पर समारोहों का आयोजन किए जाने के उल्लेख मिलते हैं। जिनका वर्णन इस प्रकार हैः

जन्म तथा उसके बाद के समारोह

मुस्लिम अमीर वर्ग में बच्चे के पैदा होने पर तथा बाद के समय को खुशी के साथ मनाया जाता था, जैसे नामकरण, मकतब तथा खतना आदि। मुस्लिम अमीर वर्ग जो समारोह बच्चे के पैदा होने के समय मनाते थे, वे हिन्दुओं के समारोहों से इतने मिलते-जुलते थे कि कई बार उनमें अंतर करना कठिन हो जाता है। बच्चे के जन्म के उपरान्त दाई उसको नहलाकर स्वच्छ वस्त्र में लपेटकर पुरूष रिश्तेदारों की एकत्रित सभा में ले जाती थी। जहां पर मौलवी अजान का उच्चारण करता था व नवजात शिशु के कान में प्रार्थना पढ़ता था। मुसलमानों में बच्चे के नामकरण की रस्म को बहुत से रीति-रिवाजों के साथ सम्पन्न किया जाता था, जिसमें बच्चे का दादा उसे कोई नाम देता था। बालक के जन्म के पश्चात छठा दिन भी एक महत्वपूर्ण दिन होता था, इस दिन बहुत बड़ा समारोह होता था। यह समारोह बच्चे तथा माँ को नहलाने से सम्बन्धित था।

जब बालक चार साल, चार महीने तथा चार दिन का हो जाता था, तब उसको बिस्मिल्लाह कहना सिखाया जाता था तथा उसकी शिक्षा-दीक्षा प्रारम्भ की जाती थी। यह समारोह हिन्दू धर्म के 'उपनयन संस्कार' से मिलता-जुलता था।

मुस्लिम अमीर वर्ग में बच्चे की वर्षगांठ भी अत्यन्त उत्साह से मनाई जाती थी, सम्बन्धियों का मनोरंजन किया जाता था, उन्हें भोज दिया जाता था जो कि शांति का प्रतीक है। इसके पश्चात् बूढ़ी स्त्रियां लाल या पीले धागों की डोरी में गांठ बांधती थी, बच्चे की माँ डोरी को अपने पास रखती थी। हर जन्मदिन पर वह इसमें एक गाँठ बढ़ा देती थी।

मुस्लिम विवाह

मुस्लिम अमीर वर्ग में विवाह का समारोह भी अत्यंत महत्वपूर्ण था। पैगम्बर ने विवाह पर फिजूल खर्च करने की मनाही की थी। विवाह से पहले सगाई की जाती है, जो निकाह रस्मों के अनुसार हो वही वैद्य माना जाता था। कुरान के अनुसार निकाह तीन बातों पर आधारित है- दोनों पक्षों का राजी होना, दो गवाहों का उपस्थित होना व शादी का निश्चित समझौता होना। अगर इनमें से किसी एक बात की भी कमी हो तो निकाह का कोई अर्थ नहीं होता।

आमतौर पर सारा दहेज निकाह के समय दे दिया जाता था। मुस्लिम अमीर वर्ग में विवाह समारोह तीन या चार दिन तक चलते थे, जिसमें काफी धन व्यय किया जाता था। बादशाह फर्रूखसियर ने अजीत सिंह की पुत्री से 19 अगस्त, 1715 ई. को विवाह हुआ तो अजीतसिंह ने बहुत धन दिया। अजीतसिंह की ओर से भी बादशाह फर्रूखसियार के लिए वस्त्र, चुगा, जड़ाऊ सिरपेंच, कीमती खंजर, आदि समान भेजे गये। शहजादा मुअज्जम के विवाह में भी सुनहरे और रूपहले कपड़ों के पाँवड़े बिछाए गए थे। वधु के ससुराल पहुँचने पर भी अनेकानेक धार्मिक तथा लोकगीत रस्मों का पालन होता था। वधु की मुँह दिखाई की रस्म होती थी। मुगल बादशाह औरंगजेब ने भी अपने शहजादा मुअज्जम की पत्नी की मुँह दिखाई में एक लाख की कीमत के आभूषण उपहार में दिये थे।

बादशाह का जन्म दिन

बादशाह के जन्मदिवस पर भी आनन्द मनाने का अमीरों को मौका मिलता था। मुगलकाल में तो मुहम्मदशाह की बेगम कुजशिया का भी जन्मदिन मनाया गया था। बादशाह इस अवसर पर बहुमूल्य रत्नों से आभूषित शानदार सिहांसन पर आसीन होकर अमीरों से हीरे, जवाहरात, मोती, पन्ने तथा भेंटें और उपहार स्वीकार करता था। बादशाह अपना जन्म दिन सूर्यवर्ष व चन्द्रवर्ष दोनों के अनुसार मनाता था।

मीना बाजार

यह एक मनमौजी त्यौहार था। इस उत्सव के दौरान बादशाह रनिवास में हुआ करता था। इस त्यौहार को मीना बाजार कहते थे, मीनाबाजार को अकबर 'खुशरोज' भी कहा करता था। इस प्रथा की शुरूआत मुगल बादशाह हुमायूँ ने की थी। बादशाह स्वयं तथा उसके अन्तःपुर की बेगमें इन बाजारों में आती थी तथा बड़े-बड़े रईसों की स्त्रियां भी आमंत्रित होती थी। उमरावों तथा मुख्य मनसबदारों की पत्नियाँ भी दुकाने लगाती थी।

इसके अलावा मुगल बादशाह सिंहासनारोहण की वर्षगांठ भी मनाते थे। बादशाह औरंगजेब सिंहासनारोहण की वर्षगांठ पर दीवान-ए-खास में आया। बादशाह को मुबारकवाद देने के लिए बड़े-बड़े मंत्री-मनसबदार उपस्थित हुए जिनमें मुख्य थे - कुतुबलमुल्क, बख्शी-उल-मुमालिक, अमीरूल-उमरा बहादुर, मोतमदिलमुल्क तथा खतमादुद्दौला ने मुबारकवाद दी।

मुगल अमीरों के अधीन लोक कल्याण कार्य

मुगल साम्राज्य मूलतः सैनिक प्रकृति का राज्य था। फिर भी कोई भी राज्य अपने अधीन प्रजा के हित तथा लोक कल्याण के कार्यों के प्रति लम्बे काल तक पूर्णतः विमुख नहीं रह सकता। मुगल शासकों द्वारा लोक कल्याण की दृष्टि से किए गए कार्यों में मुख्यतः सड़कों व पुलों का निर्माण, नहरों का खुदवाना, सरायों का निर्माण व मस्जिद और इबादत खानों का निर्माण आदि शामिल थे। मुगल शासकों के साथ-साथ मुगल अमीरों का भी लोक कल्याण कार्य में विशेष योगदान था। निर्माणकारी कार्यों की देखरेख व निर्देशन हेतू मुगल प्रशासन में एक पृथक विभाग था जो मीर-ए-समा नामक मन्त्री के अधीन होता था।

मुगलकाल में जहांआरा बेगम ने लाहौरी गेट पर सराये बनवाई थी। यह दो मंजिला थी। इसमें नब्बे कक्ष थे। मुगल अमीर बख्तावर खान ने अपने नाम से राजधानी के पास बख्तावर नगर बसाया था। उसने इस नगर में एक सराय बनाई थी इसमें चैंसठ कक्ष थे। इसके बीच में आंगन था जो बयालीस गज लम्बा चालीस गज चैड़ा था। सराय में एक बहुत ही सुंदर हमाम (स्नानागार) निर्माण करवाया था। सराये के पास एक बहुत ही सुंदर बाग लगवाया था जिसका क्षेत्रफल लगभग चार बीघा था इसके पश्चिम छोर पर एक मस्जिद बनवाई थी। बहादुरशाह के वजीर रोशनउदद्दौला और सजावट खान ने भी सरायों का निर्माण करवाया। लेकिन इनके बारे में विस्तार से जानकारी नहीं मिलती।

सैय्यद बंधुओं ने भी अपने समय में अनेक लोक कल्याण कार्य किये थे हुसैन अली खां तो अपने समय का हातिम माना जाता था। कितने ही लोगों को उसके यहाँ से पका हुआ भोजन और अन्न दिया जाता था। जब औरंगाबाद में दुर्भिक्ष हुआ तो उसने बहुत बड़ी धनराशि और अन्नराशि गरीबों और विधवाओं की सहायता के लिए दी थी। उसने औरंगाबाद के बांध का निर्माण कार्य शुरू किया था। यद्यपि आजुद्दौला और ईवजखाँ ने इस बान्ध को ऊँचा करवाया था और वहां पर नजदीक एक मसजिद बनवाई थी। परन्तु इस बड़े काम का आरम्भ हुसैन अली खां ने ही किया था। जब पानी की कमी होती थी तो इससे लोगों को बड़ी सहायता मिलती थी। अपने समय में इन सैय्यदों ने अनेकों सरायें, पुल तथा जनहित के लिए कई कार्य करवाए थे। सैय्यद अब्दुल्ला शान्ति, धैर्य और सहानुभूति के लिए प्रसिद्ध था।

अमीर बख्तावर खान ने दो पुलों का निर्माण करवाया था। जिनमें पहला पुल बख्तावर नगर और फरीदाबाद के मध्य बहने वाली नदी के मध्य था। दूसरा पुल राजधानी के समीप गुजरने वाली शाह नहर पर था। अमीर रोशनउद्दौला ने भी एक पुल बनवाया था। रोशनउदद्दौला ने दिल्ली में दो मस्जिदें बनवाई थी जिसकी मीनारें और गुम्बदें स्वर्ण जड़ित थी। इसलिए उन्हें सुनेहरी मस्जिद कहते थें इनमें से एक मस्जिद चाँदनी चैक पर पुरानी कोतवाली के पास है। इसके पास ही एक मदरसे का निर्माण भी किया गया था। इसी ने पानीपत और करनाल में भी मदरसों का निर्माण करवा और स्वयं का मकबरा भी बनवाया था। पानीपत में शाह सफरूद्दीन बू अली कलंदर की कब्र पर सोने की प्लेटें चढ़वाई थी। निजामउलमुल्क आसफजहाँ के पुत्र गाजीदद्दीन खान फिरोज जंग ने दिल्ली में एक मस्जिद और मदरसे का निर्माण करवाया था। वर्तमान में यह मदरसा जाकिर हुसैन कालेज के प्रांगण में है। ऐतमाउद्दौला मुहम्मद अमीन खान ने दिल्ली के अजमेरी गेट के बहार एक मदरसे का निर्माण करवाया था। नवाब शुजाउद्दौला ने फैजाबाद में बहुत सी सुंदर इमारतों का निर्माण करवाया जिनमें महल, सरायें एवं दीवानखाना भी शामिल है। ये सभी इमारतें

विभिन्न रंगों से अलंकृत हैं। महल के अन्दर उन्होंने अंगूरी बाग, गुलाब बाग, लाल बाग और मोती बाग की स्थापना करवाई। इन बागों में विभिन्न प्रकार के फूल और फलदार वृक्ष होते थे।

नवाब शुजाउद्दौला ने गोमती नदी पर एक पुल का निर्माण शुरू किया था जोकि आसफउद्दौला के समय में पूर्ण हुआ था इसका निरीक्षक राजा नवल राय था। कामगार खान ने दिल्ली में मजनूशाह के टीले के पास एक बाग बनवाया। जिसका नाम पान बाग रखा था। इसके अन्दर नरगिस फूलों को विशेष रूप से उगाया गया था। बख्तावर खान ने बख्तावर नगर और उसके परिसर में अनेक बागों का निर्माण करवाया था। बादशाह मुहम्मदशाह के समय में अमीर रोजअफजून ने बाग-ए-नजीर की स्थापना करवाई। सन् 1728 को अमीर महलदार खान ने बाग-ए-महलदार बनवाया था जोकि सब्जीमण्डी के पास था। इनके अलावा अनेक अमीरों ने अनेक बाग बनवाए। जिनमें प्रमुख हैं तीस हजारी बाग, चहारबाग, बाग-ए-जावैद खान, बाग-ए-शइस्ताखान, बाग-ए-जफरखान और बाग-ए-ताल कटौरा।

References

[1] अली मुहम्मद खान, मीराते-ए-अहमदी, अंग्रेजी अनुवाद, एम°एफ° लोखण्डवाला, ओरियण्टल इन्सटीटयूट, बरोदा, 1965।

[2] अमीर खुसरो, नूह सिपेहर, हिन्दी अनुवादः सैयद अतहर, अब्बास रिजवी, खलजीकालीन भारत (1290-1320), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010।

[3] देवलरानी खिज्रखां, हिन्दी अनुवादः सैयद अतहर, अब्बास रिजवी, खलजीकालीन भारत (1290-1320), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010।

[4] अबुल फजल, आईने-अकबरी, भाग 1, अंग्रेजी अनुवाद, एच° ब्लाचमैन, नई दिल्ली, भाग 2, 3, अंग्रेजी अनुवादः एच°एस° जौरट, (रिवाइज्ड), नई दिल्ली, पुर्नमुद्रित, 2001।

[5] अबुल फजल, अकबरनामा, भाग 1, अंग्रेजी अनुवादः ए°एस° बेवरीज, दिल्ली, 1972।

[6] इनायत खाँ, शाहजहाँनामा, अंग्रेजी अनुवादः इलियट एण्ड डाऊसन, हिस्ट्री आफ इण्डिया, एज टोल्ड बाइ इट्स ओन्न हिस्टोरियनज़, भाग 7, दिल्ली, पुर्नमुद्रित, 2008।